सरदार वल्लभ भाई पटेल

रियासतों के एकीकरण में उनका योगदान

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

सरदार वल्लभ भाई पटेल

रियासतों के एकीकरण में उनका योगदान

डॉ. मीनाक्षी शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
(राजनीतिक विज्ञान विभाग)
गोकुल दास हिंदू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

सरदार वल्लभ भाई पटेल

रियासतों के एकीकरण में उनका योगदान

संस्करण : 2020
© लेखक
ISBN: 978-81-945367-4-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संग्रहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

समर्पण

मानवीय मूल्यों की प्रेरक
उन सभी महान विभूतियों
जिन्होनें मेरे जीवन को एक नयी दिशा दी।
जिसमें मेरे पिता
स्वर्गीय गंगा शरण शर्मा,
परम आदरणीय श्री राधव गुप्ता सर,
माननीय श्री निशांत उपाध्याय जी
एवम्
सम्मानीय श्री रवीश गुप्ता सर जी
को सादर।

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

भूमिका

वल्लभभाई झावेरभाई पटेल एक भारतीय राजनीतिज्ञ है जो सरदार पटेल के नाम में लोकप्रिय थे। पटेल के विचारों का अध्ययन स्वयं ही एकीकरण व मानवता का अध्ययन है जिन्होनें स्वतंत्रता के लिए देश के संघर्ष में अग्रणी भूमिका निभायी है और एक स्वतंत्र राष्ट्र में एकता की जोत जलाई है। पटेल ने स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम आन्दोलन में अपनी युवावस्था में मातृभूमि की सेवा में अपने को अर्पित कर दिया था और आजादी के बाद भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री के रुप में कार्य किया। भारत तथा अन्य जगहों पर उन्हें अक्सर हिंदी, उर्दू और फारसी में सरदार कहा जाता था जिसका अर्थ है "प्रमुख"। पटेल के विचारों पर बहुत कुछ लिखा गया, अनगनित शोध हुए लेकिन उनके विचार हमेशा आम व्यक्ति से लेकर दुनिया भर के विद्वानों को प्रभावित करते रहे।

मुझे यह लिखते हुए हर्ष हो रहा है कि 'सरदार वल्लभभाई पटेल : रियासतों के एकीकरण में उनका योगदान नामक यह पुस्तक उनके वैचारिकी प्रभाव के श्रृंखला की एक कड़ी है। पटेल ने अनेक धर्म और संस्कृतियों में प्रचलित विचारों को देश काल और परिस्थितियों के अनुसार संदर्भित किया और यही उनके विचार बने।

आज हमारी धरती युद्ध और उन्माद की विभीषिका पर खड़ी है। दुनिया की 30 प्रतिशत आय हथियारों के निर्माण और खरीद में खर्च की जा रही है। दुखद रूप में एशिया भी इसमें शामिल है जो न सिर्फ पटेल की धरती है बल्कि गांधी, बुद्ध, जैन, महावीर जैसी अनेक शान्तिप्रिय धर्मों की उद्भव स्थली भी है। हमारी संस्कृति में ज्ञान का भण्डार है लेकिन हम उस पर ध्यान नहीं देते या यूं कहे कि हम उसकी पैकेजिंग नहीं कर पाते। इसी कारण पटेल को पढ़ना और उनको व्याख्यायित करना बहुत जरूरी है।

SAMPLE

पूरी दुनिया में फैले उन्माद को देखकर मुझे तो ऐसा लगता है कि जैसे पटेल कहीं खो गए हैं। परन्तु ऐसा नहीं है हम उन्हें सदैव कहीं ना कहीं किसी ना किसी रुप में देखते रहते हैं। सरदार पटेल की 144 वीं जयंती पर मोदी सरकार ने जहाँ देशभर में 'रन फार यूनिटी' का आयोजन किया अनेक मिश्रण संस्थानों में भी भिन्न-भिन्न कार्यक्रम आयोजित किये और जिसका थीम राष्ट्रीय एकता दिवस पर रखा गया।

पटेल को भारत का एक सूत्रधार कहा जाता है क्योंकि ये भारत के एकीकरण की महत्वपूर्ण कड़ी की भूमिका निभाते हैं। अगर हम इतिहास के पन्ने पसरें तो देखते है कि जिस समय देश एकजुट नहीं था। भारत में सर्वत्र अलग-अलग रियासतें थी जिन्हें पटेल ने एक कर भारत बनाया। वास्तव में पटेल ही हैं जिन्होनें पूरी दुनिया के वैचारिकी को एकीकृत कर समृद्ध किया लेकिन उन्होनें इस पर कभी अधिकार नहीं जताया। दरअसल जिस तरह से गांधी के विचारों की महत्ता ये नहीं कि उन्होनें लोगों को ज्ञान दिया बल्कि उनके विचार इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होनें अपने व्यक्तिगत जीवन में उनको उतारकर प्रयोग किया। उसी प्रकार पटेल के विचार कभी भी आपको किसी खास किस्म की नैतिकता में नहीं बांधते, वरन् हमेशा जीवन जीने और सही गलत को समझने के लिए एक विकल्प देते है।

मैं आपको एक बात बताना चाहूंगी कि गांधीजी को पढ़ते समय मुझे एक बड़ी उम्दा बाते संज्ञान में आयी कि गांधी की पहली पसंद थे पटेल। गांधी जी पटेल पर अथाह भरोसा करते थे। खेड़ा सत्याग्रह का नेतृत्व करने के लिए गांधी जी ने पटेल को चुना। गांधी जी ने पटेल के सम्बन्ध में कहा, कई लोग मेरे पीछे आने के लिए तैयार थे लेकिन मैं अपना मन नहीं बना पाया कि मेरा डिप्टी कमांडर कौन होगा फिर मैंने वल्लभभाई के बारे में संक्षेप पता किया।

पटेल ने गांधी जी के सपने को साकार किया था। एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात और मैं आप सभी को बताना चाहूंगी कि 1909 में गांधी जी ने एक पुस्तक लिखी थी हिन्द स्वराज्य। यह एक छोटी सी पुस्तक है पर अगर आप गांधी जी को जानना चाहेगें तो उस पुस्तक पर दृष्टिपात जरूर करना चाहेगें जिससे यह स्पष्ट होता है कि गांधी जी एक ऐसा भारत चाहते थे जो आत्मनिर्भर हो और स्वदेशी समाज से निर्मित हो, जिसमें किसी का शोषण न हो। पटेल ने भारत में देशी रियासतों का एकीकरण कर गांधी के स्वप्न को साकार किया।

स्वतंत्रता के समय भारत में लगभग 562 देशी रियासते थी। इनका क्षेत्रफल भारत का 40 प्रतिशत था। सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व, जिस समय को हम संक्रमण काल कह सकते हैं' वी. पी. मेनन के साथ मिलकर कई देशी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हें स्वायत्ता देना सम्भव नहीं होगा। इसके परिणामस्वरूप तीन को छोड़कर शेष सभी रजवाड़ों ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। केवल जम्मू एवं कश्मीर जूनागढ़ तथा हैदराबाद स्टेट के राजाओं ने ऐसा करना नहीं स्वीकारा। जूनागढ़ सौराष्ट्र के पास एक छोटी रियासत थी और चारों ओर से भारतीय भूमि से घिरी थीं। वह पाकिस्तान के समीप नहीं थी। वहां के नवाब ने 15 अगस्त 1947 को पाकिस्तान में विलय की घोषणा कर दी। राज्य की सर्वाधिक जनता हिंदू थी और भारत में विलय चाहती थी। 1948 में वहाँ जनमत संग्रह कराया गया जो भारत के विलय के पक्ष में रहा हैदराबाद भारत की सबसे बड़ी रियासत थी, जो चारो ओर से भारतीय भूमि से घिरी थी। भारतीय सेना ने 13 सितम्बर 1948 को हैदराबाद में प्रवेश कर नवम्बर 1948 भारत में विलय करा दिया।

नेहरू जी ने कश्मीर को यह कहकर अपने पास रख लिया कि यह एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है जो आज आजादी के 72 वर्ष बाद भी अपना फन फैलाये खड़ी है और वहां आतंकवादी विष को सर्वत्र फैलायी जा रही है। किन्तु 5 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री माननीय मोदी जी और अमितशाह जी के प्रयासो से कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाला अनुच्छेद 370 और 35 (अ) समाप्त हुआ और कश्मीर भारत का अभिन्न अंग बन गया और सरदार पटेल का भारत को अखण्ड बनाने का स्वप्न साकार हुआ। 31 अक्टूबर 2019 को जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख के रुप में दो केन्द्र शासित प्रदेश अस्तित्व में आये। अब जम्मू कश्मीर केन्द्र के अधीन रहेगा तथा भारत के सभी कानून वहां लागू होगें और पटेल जी को कृतज्ञ राष्ट्र की यह सच्ची श्रद्धाजंलि है।

पटेल जी के बारे में एक बड़ी रोचक बात बताना चाहूंगी कि सरदार पटेल की तुलना बिस्मार्क के साथ की जाती है लेकिन लंदन के टाइम्स ने इनके बारे में लिखा था "बिस्मार्क की सफलताएं पटेल के सामने महत्वहीन रह जाती है।" यदि पटेल के विचारों को स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय उसी रूप में अपना लिया जाता जैसा कि वे चाहते थे तो आज चीन, तिब्बत व नेपाल के हालात आज जैसे ना होते।

पटेल जी के विचार कोई प्राप्ति नहीं बल्कि प्रक्रिया है। पटेल जी सही मायने में मनु के शासन की कल्पना थे। उनमें कौटिल्य की कूटनीतिज्ञता तथा महाराज

शिवाजी की दूरदर्शिता थी। वे केवल सरदार नहीं बल्कि भारतीयों के हृदय के भी सरदार थे। देसी रियासतों को भारत में मिलाने वाले लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल को मेरा शत-शत नमन है।

मैं डॉ. मीनाक्षी शर्मा को शुभकामनाएँ देती हूँ जिनके प्रयास से यह संकल्पना अपना पूर्ण रूप प्राप्त कर रही है।

डॉ. अंजना दास, प्राचार्या
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज,
मुरादाबाद, उ0 प्र0।

नमूना • SAMPLE

आभार ज्ञापन

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 370 एक ऐसा अनुच्छेद था जो जम्मू और कश्मीर को स्वायत्तता प्रदान करता था। संविधान के 21वें भाग में अनुच्छेद के बारे में कहा गया था- अस्थायी, संक्रमणकालीन और विशेष प्रावधान। किन्तु भारत सरकार ने 5 अगस्त 2019 को राज्य सभा में एक ऐतिहासिक जम्मू कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम पेश किया जिससे जम्मू कश्मीर राज्य से संविधान का अनुच्छेद 370 हटाने और राज्य का विभाजन जम्मू कश्मीर एवं लद्दाख के दो केन्द्र शासित क्षेत्रों के रुप में करने का प्रस्ताव किया गया। अतः जम्मू कश्मीर केन्द्र शासित क्षेत्र में अपनी विधायिका होगी जबकि लद्दाख बिना विधायी वाली केन्द्रशासित क्षेत्र होगा।

ऐसे समय में जब भारत सरकार द्वारा जब जम्मू कश्मीर और लद्दाख को दो हिस्सों में बांटकर इन्हें केन्द्र शासित प्रदेश घोषित कर दिया गया तो मैं सरदार वल्लभ भाई पटेल जी के सपने को साकार होता हुआ देख रही हूँ और मेरी पुस्तक सरदार वल्लभ भाई पटेल : रियासतों के एकीकरण में उनका योगदान संज्ञक पुस्तक का संपादन करना मेरे लिए भारत सौभाग्य की बात है। हालांकि 70 वर्ष हो गये है किन्तु इस वसुधा पर कभी ऐसा नहीं महसूस हुआ कि हम लोगों के बीच सरदार पटेल नहीं है।

पटेल जी कोई कायिक सत्ता मांग नहीं थे अपितु उनकी वैचारिक सत्ता अस्तित्ववान है। पटेल जी समाज के सभी वर्गों व क्षेत्रों के विकास की चिंता करते थे। पटेल जी राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के अग्रदूत थे। निःसंदेह स्वतंत्र भारत के प्रथम उपप्रधानमंत्री व गृहमंत्री के रूप में भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी योद्धा व भारत सरकार के आधार स्तम्भ थे। आजादी से पहले भारत की राजनीति में इनकी दृढ़ता और कार्य-कुशलता ने इन्हें स्थापित किया और आजादी के बाद भारतीय राजनीति में उत्पन्न विपरीत परिस्थितियों को देश के अनुकूल बनाने की क्षमताओं ने सरदार पटेल का कद काफी बड़ा कर दिया। पटेल जी 22 वर्ष की उम्र में जिला

SAMPLE

अधिकारी की परीक्षा पास कर बैरिस्टर बने। 1924 में खेड़ा जिला सत्याग्रह, 1928 में बारडोली सत्याग्रह में अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर अपनी राष्ट्रीय पहचान कायम की।

सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी पटेल जी के योगदान को नाकारा नहीं जा सकता। पटेल जी आज वर्तमान समय में प्रांसगिक बने हुए है जब भारत के प्रधानमंत्री माननीय मोदी जी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में देश को एकता के सूत्र में पिरोने वाले लौह पुरूष सरदार पटेल जी को याद करते हुए कहा कि उनमें जहां लोगों को एकजुट करने की अद्‌भुत क्षमता थी, वह उन लोगों के साथ भी तालमेल बिठा लेते थे जिनके साथ उनके वैचारिक मतभेद होते थे। सरदार पटेल बारीक से बारीक चीजों को बहुत गहराई से देखते थे, पर रखते थे। सही मायने में वह 'मैन ऑफ डिटेल' थे।

31 अक्टूबर 2013 को सरदार पटेल के जन्म दिवस के अवसर पर उस समय में भारत के मुख्यमंत्री तथा वर्तमान समय में भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने एक स्मारक की स्थापना कराई जो गुजरात में स्थित है। पटेल जी के जन्मदिन पर इस विशालकाय मूर्ति के निर्माण का शिलान्यास किया था। इस मूर्ति की ऊंचाई 182 मीटर की है। यह विश्व की सबसे ऊंची मूर्ति है। यह स्मारक सरदार पटेल बांध से 32 किमी. की दूरी पर साधु बेर नामक स्थान पर है जो कि नर्मदा नदी पर एक टापू है।

सफलता के मार्ग कठिन, लम्बे और थकावट भरे हैं। *'All the roads to Success is Hard, long and tiring.* यह कथन सत्य है, किन्तु इसे सरल सुविधाजनक व सही दिशा में निर्देशित करने में मार्ग दर्शक का अमूल्य योगदान रहता है। समर्थ, सुयोग्य और सफलता तक पहुँचनें के लिए कुशल मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ती है। अतः कार्य के सम्पादन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जिन्होंने सहयोग प्रदान किया है, उनके प्रति केवल आभार प्रदर्शित करना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु ये हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम है।

आज इस पुस्तक के प्रकाशन के अवसर पर मैं श्री राकेश कुमार सिंह, जिलाधिकारी मुरादाबाद के प्रति श्रद्धावनत् हूँ जो इस पुस्तक को लिखने में मेरे प्रेरणास्रोत रहे। इसके साथ में प्रो. अमित भारद्वाज, निदेशक उच्च शिक्षा विभाग, उ. प्र. शासन के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोगात्मक व्यवहार, प्रेरणायें, अमूल्य सुझाव मेरे लिये अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई, उनकों श्रद्धापूर्वक नमन।

नमूना • SAMPLE

मैं श्री निशांत उपाध्याय, वरिष्ठ कोषागार, उ.प्र. शासन, श्री अतुल पाण्डे, वित्त अधिकारी, उ.प्र. श्री धनंजय सिंह, मार्केटिंग ऑफिसर- खाद्य और सिविल सप्लाई, उ.प्र. शासन, प्रो. एस. के. चतुर्वेदी, प्रो. के. के. मिश्रा, प्रो. संजीव कुमार शर्मा, कुलपति - केन्द्रीय विश्वविद्यालय विभागाध्यक्ष बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मोतीहारी, डॉ. बी. बी. सिंह, प्राचार्य हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद, प्रो. विकास शर्मा, ऐसो. प्रो. अंग्रेजी विभाग चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, प्रो. ए. पी. सिंह, प्रो. असलम खान, ऐसो. प्रो. लतीफ खान, श्री राघव गुप्ता व गौरान्ग गुप्ता - सी. एल गुप्ता एक्पोर्ट हाउस के मालिक के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिसके परोक्ष और प्रत्यक्ष सहयोग से यह पुनीत कार्य सम्भव हो सका है।

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस के स्वामी श्री विरेन्द्र कुमार यादव जी को मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को समय से प्रकाशित कर दिया।

डॉ. मीनाक्षी शर्मा
ऐसो. प्रो. एवं विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज
मुरादाबाद
उ.प्र.

नहीं • SAMPLE

SAMPLE

विषय-सूची

	भूमिका	*vii*
	आभार ज्ञापन	*xi*
1.	ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	1
2.	भारतीय देशी रियासतों के विभिन्न समूह	38
3.	केन्द्र द्वारा प्रशासित रियासतों की समस्या	82
4.	हैदराबाद रियासत की समस्या	101
5.	जूनागढ़ रियासत की समस्या	125
6.	जम्मू कश्मीर रियासत की समस्या	147
7.	निष्कर्ष	175
	सहायक ग्रन्थ-सूची	*198*

नमूना • SAMPLE